ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 15
प्रथम ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
05 मई 2018 से 21 मई 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

तनाव रहित जीवन के लिए योग को अपनाएं

विद्यार्थी अपनी शक्ति व सामर्थ को पहचाने अपनी ऊर्जा अपनी शिक्षा में लगाएं, तनाव रहित जीवन के लिए योग को अपनाएं, अपने समय का सदुपयोग करें अपने माता–पिता के भरोसे का सम्मान करें। उक्त विचार स्वामी रामदेव ने अन्तर्राष्ट्रीय योग शिविर के आयोजक रेजोनेंस के प्रतिनिधि व पतंजलि योग समिति कोटा के प्रतिनिधियों के मध्य व्यक्त किए। पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के केन्द्रीय प्रभारी डॉ. जयद्वीप आर्य ने कहा कि विश्व योग दिवस के सफल आयोजन के लिए रेजोनेंस की टीम व पतंजलि योग समिति की टीम जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, योग संगठनों, धार्मिक व सामाजिक संगठनों से संपर्क करेगी। इस बैठक में रेजोनेंस के सीईओ आशीष शर्मा, सोमवीर तयाल व भारत स्वाभिमान के राष्टीय प्रभारी अरविंद पांडे जिला अध्यक्ष प्रदीप शर्मा व वेद मित्र शामिल रहे।

कार्यालय आदेश

प्रधान / मंत्री जी

समस्त आर्य समाज अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान , को सूचित किया जाता है कि जिन आर्य समाजों ने अभी तक वार्षिक मानचित्र सभा कार्यालय को प्रेषित नही किया है वे वित्त वर्ष 1 अप्रेल 2017 से 31 मार्च 2018 का दशाशं , निश्चित कोटि, एवं आर्य मार्तण्ड , शुल्क निर्धारित प्रपत्र (वार्षिक मानचित्र) में भरकर 30.5.2018 तक अवश्य ही सभा कार्यालय को भेज देवें । निर्धारित प्रपत्र मार्तण्ड के इस अंक के पृष्ठ संख्या 6 पर प्रकाशित किया है तथा सम्बन्धित आर्य समाज को डाक द्वारा प्रेषित किया जायेगा । साथ ही यह भी संसूचनीय है कि जिन संस्थाओं द्वारा राशि सीधे बैंक में चैक , डी.डी या स्थानान्तरित कर जमा करवाई जाती है वे जमा पर्ची भेज कार्यालय से रसीद अवश्य प्राप्त कर लें । जिनको विगत वर्ष की बैंक में जमा राशि की रसीद कारण वश प्राप्त नहीं हुई वे भी सूचना देकर या कार्यालय फोन 0141–2621879 पर सूचना अवश्य देवें ताकि रसीद प्रेषित की जा सकें

मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश–विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की। 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठयक्रम में हैं पाठयक्रम पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

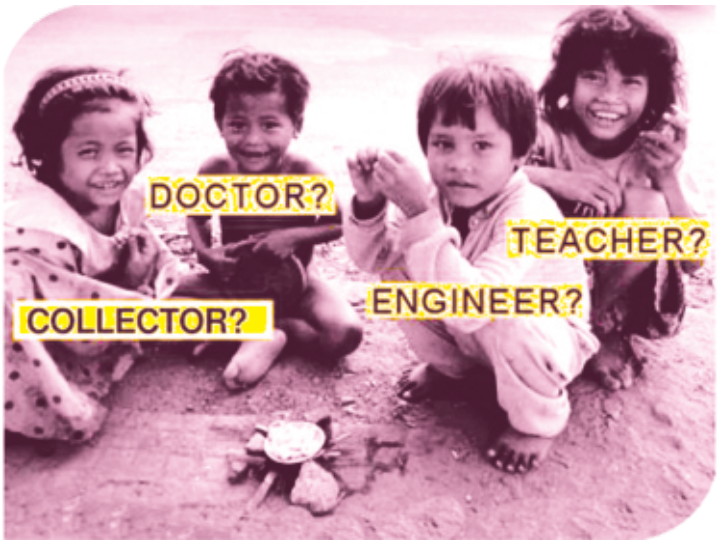

विकासवाद का वैदिक सिद्धान्त

गतांक से आगे...

इस कारण वनस्पतियों की उत्पत्ति के पश्चात् जीव जन्तुओं की उत्पत्ति एककोशीय जीव से ही प्रारम्भ होती है। वनस्पतियों में भी सरल से जटिल संरचना वाली वनस्पतियों की क्रमिक उत्पत्ति होती है। क्रमिक उत्पत्ति का अर्थ यह नहीं कि शैवाल विकसित होकर वट वृक्ष बन जाये अथवा पीपल, आम और बबूल बादाम का रूप ले ले। इसी प्रकार एककोशीय जीव अमीबा की उत्पत्ति भूमि वा जल में होती है, लेकिन कोई जीव भले ही वह एककोशीय हो अथवा बहुकोशीय, केवल कुछ पदार्थों का रासायनिक संयोग मात्र ही नहीं होता, अपितु उसके अन्दर सूक्ष्म चेतन तत्व जीवात्मा का भी संयोग होता है। सम्पूर्ण संयोग ही जीव का रूप होता है। वर्तमान विज्ञान भी रासायनिक संयोगों से कोशिका की उत्पत्ति मानता है–

A very important step the formation of a cell must have been the development of lipid mambrane. In order that biological systems can function efficiently, it is essential that the enzymes connected with successive stages of synthesis of biochemical pathway should be in a close a proximity to one another. The necessary conditions for this are obtained in cells by means of lipid manbranes which can maintain local high concentration of reactants.

The presence of hydrocarbons early in the earth's history has already been mentioned....

Life requires for its maintanance a continous supply of energy this could have been provided by ultraviolate or visible light from the sun, or possibly partly from the break down of unstable free radiations produced in the earth's atmosphere by ultraviolate light. [Cell Biology, page - 474 by E.J. Ambrose & Dorothy M.Easty, London -1973]

भाव यह है कि इस पृथिवी पर रासायनिक, जैविक क्रियाओं से विभिन्न प्रकार के एंजाइम्स का निर्माण होकर जीवन हेतु आवश्यक पदार्थों का निर्माण हो गया। इसके साथ ही अनेकत्र रासायनिक पदार्थों द्वारा ही कोशिका भित्तियों तथा जीव द्रव्यादि का निर्माण इस भूमि पर हुआ तथा उन कोशिकाओं को सतत पोषण देने का कार्य पृथिवी पर उपस्थित आवश्यक रासायनिक पदार्थों तथा सूर्य के प्रकाश ने किया। कुछ वैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कि पृथिवी पर जीवन किसी अन्य ग्रह से आया, उनसे हम जानना चाहते हैं कि जिस प्रकार किसी अन्य ग्रह पर जीवन की उत्पत्ति हो सकती है, उसी प्रकार इस पृथिवी पर क्यों नहीं हो सकती? वस्तुतः ऐसा विचार सर्वथा अपरिपक्व सोच का परिणाम है। वर्तमान कुछ वैज्ञानिक भी इस धारणा से सहमत नहीं हैं। वे कहते हैं–

The view the life did infact originate on the

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

earth itself after it had cooled over a period of many thousands of years is almost universally accepted today. [Cel Biology, page - 474]

जो वैज्ञानिक अमीबा से विकसित होकर अर्थात् एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति के उत्पन्न होने की बात करते हैं, वे यह नहीं विचारते कि न तो वनस्पति में और न प्राणियों में ऐसा परिवर्तन सम्भव है और न इसकी कोई आवश्यकता है। हम यहाँ वैज्ञानिकों के कल्पित व मिथ्या विकासवाद पर कोई प्रश्न इस कारण नहीं करेंगे, क्योंकि हम इस पर पहले अनेक प्रश्न कर चुके हैं। जो डार्विन के विकासवाद की विस्तार से समीक्षा चाहते हैं, उन्हें आर्य विद्वान् पं. रघुनन्दन शर्मा द्वारा लिखित 'वैदिक सम्पति' नामक ग्रन्थ पढ़ना चाहिए। भला जब अमीबा की उत्पत्ति रासायनिक क्रियाओं से हो सकती है, तब विभिन्न प्राणियों के शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति इसी प्रकार क्यों नहीं हो सकती? जब 500 से अधिक गुणसूत्रों वाला अमीबा रासायनिक अभिक्रिया से उत्पन्न हो सकता है, तब बन्दर, चिम्पैंजी, ओरांगउटान जिनमें 48–48 गुणसूत्र होते हैं, 46 गुणसूत्र वाले मनुष्य में स्त्री व पुरुष के 23–23 गुणसूत्र वाले शुक्राणु व अण्डाणु की उत्पत्ति अमीबा की भांति क्यों नहीं हो सकती? मनुष्य के ही बराबर गुणसूत्र वाले Sable Antelope जैसे हिरन जैसे पशु तथा Reaves's Muntjac नामक हिरन जैसे जानवर के शुक्राणु व अण्डाणु, 56 गुणसूत्र वाले हाथी के शुक्राणु व अण्डाणु क्यों उत्पन्न हो सकते? चींटी, जिसमें केवल 2 गुणसूत्र ही होते हैं, वह क्यों उत्पन्न हो सकती?

यहाँ वैदिक मत यह है कि जिस जीव के भरण–पोषण हेतु जितने कम पदार्थों की आवश्यकता होती है, वह जीव उतना पहले ही उत्पन्न होता है। सभी प्राणियों से पूर्व वनस्पतियों की उत्पत्ति होती है और मांसाहारी प्राणियों से पूर्व शाकाहारी प्राणियों की तथा शाकाहारियों में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जिसे सबसे विकसित व उन्नत माना जा सकता है एवं वह विभिन्न प्राणियों व वनस्पतियों पर निर्भर रहता है, इसी कारण उसकी उत्पत्ति सबसे बाद में होती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि भ्रूणों का विकास बिना मादा के कैसे होता है? शुक्राणु व अण्डाणु तो मानलें रासायनिक क्रिया के फलस्वरूप भूमि व जल में उत्पन्न हो गया परन्तु शुक्राणु व अण्डाणु का निषेचन व भ्रूण का विकास कहाँ व कैसे हुआ? इस विषय में मनुष्योत्पत्ति की चर्चा करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रन्थ में युवावस्था में भूमि से उत्पत्ति बताई है। उन्होंने तर्क दिया है कि यदि शिशु अवस्था में उत्पत्ति होती तो, उनकी रक्षा व पालन कौन करता तथा यदि वृद्ध उत्पन्न होते, तो वंश परम्परा कैसे चलती? इस कारण मनुष्य की युवावस्था में ही भूमि से उत्पत्ति होती है। यद्यपि इस विषय में उन्होंने कोई प्रमाण नहीं दिया परन्तु हमें ऋग्वेद के प्रमाण इस विषय में मिले, जहाँ लिखा है–

उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम्।
ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातुनिर्ऋतेरुपस्थात्।।
ऋग्वेद 10.18.10

इस पर मेरा आधिभौतिक भाष्य–हे जीव! (सुशेवाम्) {सुशेवः सुसुखतमः– निरुक्त 3.3} उत्तम सुख देने में सर्वश्रेष्ठ (एताम्) इस (मातरम्) माता के समान (भूमिम्) प्रारम्भ में जिसके गर्भ में सभी प्राणी उत्पन्न होते व जिस पर सभी प्राणी निवास करते हैं, वह पृथिवी (उरु–व्यचसम्) अति विस्तार वाली होकर सभी भ्रूणों को (उप सर्प) निकटता से प्राप्त होती है, इसके साथ ही उस गर्भ का आन्तरिक आवरण निरन्तर हल्का स्पन्दन करता रहता है (ऊर्णम्रदा) {ऊर्णम्रदा इत्यूर्णमृद्वीत्येवैतदाह– काश. 4.2.1. 10, साध्वी देवेभ्य इत्येवैतदाह यदाहोर्णम्रदसं त्वेति– श. 1.3.3. 11} वह भूमि उन भ्रूणों को ऐसा आच्छादन प्रदान करती है, जो ऊन के समान कोमल, चिकना व आरामदायक हो। वह उस दिव्य भ्रूण को सब ओर से गर्भ के समान सुखद स्पर्शयुक्त घर प्रदान करती है। (युवतिः) उस गर्भरूप पृथिवी में नाना जीवनीय रसों के मिश्रण–अमिश्रण की क्रियाएं निरन्तर चलती रहती हैं (दक्षिणावतः) वह पृथिवी उन भ्रूणों को तब तक पोषण प्रदान करती रहती है, जब तक वे अपना पालन व रक्षण करने में पूर्ण दक्ष अर्थात् सक्षम न हो जायें (एषा) यह भूमि (त्वा) तुम जीव को (निर्ऋतेः–उपस्थात्) {निर्ऋतिर्निरमणात् ऋच्छतेः कृच्छ्रापत्तिरितरा– निरु. 2.8} पूर्ण रूप से निरन्तर सानन्द रमण करती है, ऐसे सुरक्षित व उत्तम स्थानों में (पातु) उन भ्रूणों वा जीवों का पालन करती है। इसके साथ ही जहाँ क्लेश पहुंच सकता है, ऐसे असुरक्षित स्थानों से उस भूमि के गर्भरूप आवरण उस जीव व भ्रूण की रक्षा करते हैं।

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवी मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि।। ऋग्वेद 10.18.11
लेखकः– आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

आर्य वीर दल राजस्थान के युवा चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविर

उदयपुर संभागीय शिविर

15 –21 जून 2018

स्थान – सरदार वल्लभ भाई पटेल, स्टेडियम, फतेहनगर

सम्पर्क : जीवनलाल जिला संचालक –9460080886
एम.पी. सिंह (संभाग संचालक) मों 7014133853

अजमेर संभागीय शिविर

आर्य वीर शिविर 23–30 मई 2018

आर्य वीरांगना शिविर 5–12 जून 2018,
स्थान – ऋषि उद्यान, अजमेर
सम्पर्क सूत्रः विश्वास पारीक मो. 9460016590
सुशील शर्मा मो. 7665447674

भरतपुर संभागीय शिविर

गंगापुर सिटी 14–20 मई 2018
स्थान – अग्रसेन रिसोर्ट, जयपुर रोड़
सम्पर्क सूत्रः
नरेन्द्र आर्य (जिला संचालक) मों 9414986451
अभिषेक (नगर संचालक) मों 9309258185, 7014517154

जयपुर संभागीय शिविर

14–20 मई 2018

स्थान – गुरुकुल ग्लोबल स्कूल, सिरसी
सम्पर्क–दीपक शास्त्री (जिला संचालक) मो. 9462965528
हनुमान शर्मा (उपमंत्री आर्य समाज वैशाली नगर) मो. 9351315306

जोधपुर संभागीय शिविर

01–10 जून 2018

स्थान –महर्षि दयानन्द स्मृति भवन
सम्पर्कः सेवा राम आर्य मों 8946981888
किशन जी गहलोत मों 9829027481

कोटा संभागीय शिविर

03 –10 जून 2018

स्थान – कोटा शहर
सम्पर्कः रमेश गोस्वामी (जिला संचालक कोटा) 9461182706
वृद्धिचन्द शास्त्री मों 941300264
सुनिल दुबे मन्त्री आर्य समाज विज्ञान नगर 8740056581

बीकानेर संभागीय शिविर

15 –21 जून 2018

स्थान –श्री डूंगरगढ़
सम्पर्क
श्री सुभाष शास्त्री (संभाग संचालक) मों 9414416410 , श्री अमित आर्य (जिला संचालक) मों 9929946469

आवश्यकता

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरयाणा) में संस्कृत – साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवानिवृत अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें । आवास, भोजन, गोदुग्ध की निःशुल्क व्यवस्था के साथ–साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा । इच्छुक महानुभाव गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर दिनांक 26–27–28 मई को पधारे ।

आचार्य ओम प्रकाश गुरुकुल आबू सम्पर्क सूत्र :–8764218881,9414589510,8005940943

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तरः–

1) प्रश्न – मृत्यु न होती तो क्या होता ?
उत्तर – तो बहुत अव्यवस्था होती । पृथ्वी की जनसंख्या बहुत बढ़ जाती। और यहाँ पैर धरने का भी स्थान न होता ।
(2) प्रश्न – क्या मृत्यु होना बुरी बात है ?
उत्तर – नहीं, मृत्यु होना कोई बुरी बात नहीं ये तो एक प्रक्रिया है शरीर परिवर्तन की ।
(3) प्रश्न – यदि मृत्यु होना बुरी बात नहीं है तो लोग इससे इतना डरते क्यों हैं ?
उत्तर – क्योंकि उनको मृत्यु के वैज्ञानिक स्वरूप की जानकारी नहीं है । वे अज्ञानी हैं । वे समझते हैं कि मृत्यु के समय बहुत कष्ट होता है । उन्होंने वेद, उपनिषद, या दर्शन को कभी पढ़ा नहीं वे ही अंधकार में पड़ते हैं और मृत्यु से पहले कई बार मरते हैं ।
(4) प्रश्न – मृत्यु के समय कैसा लगता है ? थोड़ा सा तो बतायें ?
उत्तर – जब आप बिस्तर में लेटे–लेटे नींद में जाने लगते हैं तो आपको कैसा लगता है ? ठीक वैसा ही मृत्यु की अवस्था में जाने में लगता है उसके बाद कुछ अनुभव नहीं होता । जब आपकी मृत्यु किसी हादसे से होती है तो उस समय आमको मूर्छा आने लगती है, आप ज्ञान शून्य होने लगते हैं जिससे की आपको कोई पीड़ा न हो । तो यही ईश्वर की सबसे बड़ी कृपा है कि मृत्यु के समय मनुष्य ज्ञान शून्य होने लगता है और सुषुप्तावस्था में जाने लगता है ।
(5) प्रश्न – मृत्यु के डर को दूर करने के लिए क्या करें ?
उत्तर – जब आप वैदिक आर्ष ग्रन्थ (उपनिषद, दर्शन आदि) का गम्भीरता से अध्ययन करके जीवन,मृत्यु, शरीर, आदि के विज्ञान को जानेंगे तो आपके अन्दर का, मृत्यु के प्रति भय मिटता चला जायेगा और दूसरा ये की योग मार्ग पर चलें तो स्वंय ही आपका अज्ञान कमतर होता जायेगा और मृत्यु भय दूर हो जायेगा। आप निडर हो जायेंगे। जैसे हमारे बलिदानियों की गाथायें आपने सुनी होंगी जो राष्ट्र की रक्षा के लिये बलिदान हो गये। तो आपको क्या लगता है कि क्या वो ऐसे ही एक दिन में बलिदान देने को तैयार हो गये थे? नहीं उन्होने भी योगदर्शन, गीता, साँख्य, उपनिषद, वेद आदि पढ़कर ही निर्भयता को प्राप्त किया था। योग मार्ग को जीया था, अज्ञानता का नाश किया था। महाभारत के युद्ध में भी जब अर्जुन भीष्म, द्रोणादिकों की मृत्यु के भय से युद्ध की मंशा को त्याग बैठा था तो योगेश्वर कृष्ण ने भी तो अर्जुन को इसी सांख्य, योग, निष्काम कर्मों के सिद्धान्त के माध्यम से जीवन मृत्यु का ही तो रहस्य समझाया था और यह बताया कि शरीर तो मरणधर्मा है ही तो उसी शरीर विज्ञान को जानकर ही अर्जुन भयमुक्त हुआ। तो इसी कारण तो वेदादि ग्रन्थों का स्वाध्याय करने वाले मनुष्य ही राष्ट्र के लिए अपना शीश कटा सकता है, वह मृत्यु से भयभीत नहीं होता, प्रसन्नता पूर्वक मृत्यु को आलिंगन करता है।
(6) प्रश्न – किन किन कारणों से पुनर्जन्म होता है ?
उत्तर – आत्मा का स्वभाव है कर्म करना, किसी भी क्षण आत्मा कर्म किए बिना रह ही नहीं सकता। वे कर्म अच्छे करे या फिर बुरे, ये उसपर निर्भर है, पर कर्म करेगा अवश्य। तो ये कर्मों के कारण ही आत्मा का पुनर्जन्म होता है। पुनर्जन्म के लिए आत्मा सर्वथा ईश्वराधीन है।
(7) प्रश्न – पुनर्जन्म कब–कब नहीं होता ?
उत्तर – जब आत्मा का मोक्ष हो जाता है तब पुनर्जन्म नहीं होता है।
(8) प्रश्न – मोक्ष होने पर पुनर्जन्म क्यों नहीं होता ?
उत्तर – क्योंकि मोक्ष होने पर स्थूल शरीर तो पंचतत्वों में लीन हो ही जाता है, पर सूक्ष्म शरीर जो आत्मा के सबसे निकट होता है, वह भी अपने मूल कारण प्रकृति में लीन हो जाता है ।
(9) प्रश्न – मोक्ष के बाद क्या कभी भी आत्मा का पुनर्जन्म नहीं होता ?
उत्तर – मोक्ष की अवधि तक आत्मा का पुनर्जन्म नहीं होता । उसके बाद होता है।
(10) प्रश्न – लेकिन मोक्ष तो सदा के लिए होता है, तो फिर मोक्ष की एक निश्चित अवधि कैसे हो सकती है ?
उत्तर – सीमित कर्मों का कभी असीमित फल नहीं होता । यौगिक दिव्य कर्मों का फल हमें ईश्वरीय आनन्द के रूप में मिलता है, और जब ये मोक्ष की अवधि समाप्त होती है तो दुबारा से ये आत्मा शरीर धारण करती है ।
(11) प्रश्न – मोक्ष की अवधि कब तक होती है ?
उत्तर – मोक्ष का समय ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष है, जब तक आत्मा मुक्त अवस्था में रहती है ।
(12) प्रश्न – मोक्ष की अवस्था में स्थूल शरीर या सूक्ष्म शरीर आत्मा के साथ रहता है या नहीं ?
उत्तर – नहीं मोक्ष की अवस्था में आत्मा पूरे ब्रह्माण्ड का चक्कर लगाता रहता है और ईश्वर के आनन्द में रहता है, बिलकुल ठीक वैसे ही जैसे कि मछली पूरे समुद्र में रहती है । और जीव को किसी भी शरीर की आवश्यकता ही नहीं होती।
(13) प्रश्न – मोक्ष के बाद आत्मा को शरीर कैसे प्राप्त होता है ?
उत्तर – सबसे पहला तो आत्मा को कल्प के आरम्भ (सृष्टि आरम्भ) में सूक्ष्म शरीर मिलता है फिर ईश्वरीय मार्ग और औषधियों की सहायता से प्रथम रूप में अमैथुनी जीव शरीर मिलता है, वो शरीर सर्वश्रेष्ठ मनुष्य या विद्वान का होता है जो कि मोक्ष रूपी पुण्य को भोगने के बाद आत्मा को मिला है । जैसे इस वाली सृष्टि के आरम्भ में चारों ऋषि विद्वान (वायु , आदित्य, अग्नि , अंगिरा) को मिला जिनको वेद के ज्ञान से ईश्वर ने अलंकारित किया । क्योंकि ये ही वो पुण्य आत्मायें थीं जो मोक्ष की अवधि पूरी करके आई थीं ।
(14) प्रश्न – मोक्ष की अवधि पूरी करके आत्मा को मनुष्य शरीर ही मिलता है या जानवर का ?
उत्तर – मनुष्य शरीर ही मिलता है ।
(15) प्रश्न – क्यों केवल मनुष्य का ही शरीर क्यों मिलता है ? जानवर का क्यों नहीं ?
उत्तर – क्योंकि मोक्ष को भोगने के बाद पुण्य कर्मों को तो भोग लिया , और इस मोक्ष की अवधि में पाप कोई किया ही नहीं तो फिर जानवर बनना सम्भव ही नहीं , तो रहा केवल मनुष्य जन्म जो कि कर्म शून्य आत्मा को मिल जाता है ।

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।
अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

।। ओ३म् ।।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का वार्षिक चित्र

इस प्रपत्र में पूर्ण विवरण अवश्य भेजें

1 अप्रैल..... से 31 मार्च..... तक का विवरण एवं 1 अप्रैल..... से 31 मार्च..... तक का विवरण

आर्य समाज.....जिला.....का वार्षिक वृत्तान्त

आय का विवरण	रू. पै.	व्यय का विवरण	रू. पै.
सभासदों का चंदा दान मकान किराया विवाह संस्कारों से आय अन्य आय		साप्ताहिक सत्संग में खर्च अतिथि सत्कार सभा को निश्चित कोटि सभा को दशांश वेद प्रचार आर्य मार्तण्ड दयानंद सेवा सदन वार्षिक उत्सव विशेष प्रचार आदि	
योग		योग	

1. वर्ष के आरम्भ में सभासदों की संख्या
   वर्ष के अंत में आर्य सभासदों की संख्या
   आर्यों (सहायकों) की संख्या रही।
2. वार्षिक निर्वाचन दिनांक को हुआ।
3. अंतरंग साधारण सभा बार हुई।
4. वार्षिकोत्सव दिनांक को हुआ।
5. सभा को दी गई राशि की
   रसीद सं. दि. है।
   (1.) निश्चित कोटि (2.) दशांश
   (3.) आर्य मार्तण्ड (4.) अन्य

6. उपर्युक्त आय पर..... दशांश की राशि.....बनती है।
   दशांश निश्चित कोटि आर्य मार्तण्ड का कुल योग.....होता है।
7. आर्य समाज के अधीन निम्नस्थ संस्थायें है। (यहाँ केवल नाम ही लिखे, ब्यौरा पृथक संलग्न करे)
8. इस समाज की साधारण सभा दिनांक ..... द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए निम्नस्थ प्रतिनिधि चुने गये।

क्र.स.	प्रतिनिधि का नाम	पिता का नाम	आयु	शतांश चन्दा	हस्ताक्षर प्रतिनिधि	फोन न.
1.						
2.						
3.						
4.						

प्रमाणित किया जाता है कि उपयुक्त प्रतिनिधियों की अधिवेशनों में उपस्थिति नियमानुकूल है तथा इनकी आय का शताशं चन्दा पूरे वर्ष का प्राप्त हो चुका है। सभा के अधिवेशन में वे ही प्रतिनिधि भाग ले सकेंगे जिनके आय का शतांश चन्दा उपर्युक्त वार्षिक चित्र में अंकित होगा।

दिनांक ..... ह. प्रधान ह. मंत्री ह. कोषाध्यक्ष ह. आडीटर

आर्य समाज के आर्य सभासदों की सूची जिनका गत वर्ष का पूरा चन्दा जमा हो चुका है और साप्ताहिक अधिवेशन में 25% उपस्थिति है। वे दो वर्ष से अधिक समय से सदाचार पूर्वक आर्य समाज के सदस्य हैं।

साधारण सदस्यों हेतु नमूना प्रपत्र

क्र.स.	नाम	पिता का नाम	आयु	मासिक आय	विशेष	फोन न.

ह. मंत्री आर्य समाज

वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर

आयोजक आर्य वीर दल राजस्थान

स्थान –
आर्ष महाविद्यालय आबु पर्वत सिरोही

दिनांक –
29 मई से 1 जून 2018

45 कुल शिवारार्थी अधिकतम भाग ले सकेंगे। पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा।
युवा अथवा स्वयं को युवा समझने वाले अधिक उम्र के आर्य जन भाग ले सकेगे।

आबू के प्राकृतिक वातावरण एवं स्वास्थ्य लाभ का स्वर्णिम अवसर

सम्पर्क

आचार्य ओम प्रकाश
गुरूकुल आबु पर्वत
9414589510

गगेन्द्र आर्य स्नातक
गुरूकुल आबु पर्वत
74250 70732

देवेन्द्र शास्त्री कार्यकारी संचालक
आर्य वीर दल राजस्थान
मों 9352547258, 9785462640

निमंत्रणपत्रम्

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज सिरोही का

विंशतितम भव्य वार्षिकोत्सव एवं तृतीय समावर्त्तन दीक्षा समारोह

ज्येष्ठ कृ. नवमी, दशमी, एकादशी, वि.सं. 2075
शुक्र, शनि, रवि, 8, 9, 10 जून 2018

सम्पर्क – 02976–270629, 9680674789

- परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।
  – सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत देलवाड़ा सिरोही का 28 वाँ भव्य त्रि दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 26–27–28 मई 2018 को बडे धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है।
   सम्पर्कः आचार्य ओम प्रकाश आर्य मों 9414589510
   रजनीकान्त आर्य मों 9461046483
2. 28वाँ आर्य महासम्मेलन अटलांटा (अमेरिका) : 19 से 22 जुलाई 2018
2. इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली 25–26–27–28 अक्तूबर, 2018

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषकः–
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर–302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।